अंगारक

आलेख - डॉ० योगेश जैन०

चित्रांकन - त्रिभुवन सिंह
सहयोग - सरोज वी० एम०

आज सेठानी ईर्ष्या से जली-भुनी जा रही थी और पड़ोसिन को नीचा दिखाने की सोच रही थी, तभी उसके पति ने प्रवेश किया।

अरी भागवान ! सुनो अभी तक भोजन नहीं--

मुझसे मत बोलो तुम्हारी नौकरानी हूँ ? रसोइया हूँ ?

चन्द्रमुखी से ज्वालामुखी बनी पत्नी की खुशामद करते हुये भोलू बोला —

रानी कुछ कहो भी, बात क्या हुई ? कहे बिना हमें कैसे पता चले ?

क्या कहूँ ? मुहल्ले की सारी औरतें तो रोज नये-नये गहने पहने.. और मैं बस वही सालों पुराना हार, चूड़ियाँ -।

अरी बावली ! कैसी बातें करती हो ? नारी के गले की शोभा तो मधुर वाणी, व्यवहार और उसका शील है।

तुम कुछ समझते हो ? बिना सुन्दर गहने पहने समाज में सम्मान नहीं मिलता।